



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 50]
No. 50]

नई दिल्ली, शुक्रवार, फरवरी 23, 2007/फाल्गुन 4, 1928
NEW DELHI, FRIDAY, FEBRUARY 23, 2007/PHALGUNA 4, 1928

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 फरवरी, 2007

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय :—चीन जन. गण. और जापान से पेरॉक्सो सल्फेट (पीसल्फेट्स के नाम से भी ज्ञात) के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

फा. सं. 14/1/2006/डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

1. यतः, मैं गुजरात परसाल्ट्स प्रा. लि. अहमदाबाद; मै. कैलिबर केमिकल्स प्रा. लि., मुम्बई और मै. योयो केमिकल्स अहमदाबाद (जिन्हें एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) ने अधिनियम और नियम के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् यह प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष संयुक्त रूप से याचिका दायर की है जिसमें चीन जन. गण. तथा जापान (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित परसल्फेट्स के नाम से भी ज्ञात पेरॉक्सोसल्फेट्स (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है और संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए जांच प्रारंभ करने का अनुरोध किया गया है।

2. और, यतः, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदकों द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसार कथित पाटन की उपस्थिति, मात्रा एवं प्रभाव का निर्धारण करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश करने, जिसे यदि लागू किया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच प्रारंभ करते हुए, दिनांक 28 जुलाई, 2006 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई थी।

क. प्रक्रिया

3. प्राधिकारी द्वारा उक्त जांच की शुरुआत करने संबंधी सार्वजनिक सूचना जारी करने के पश्चात् इस जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है।
 - (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अपने पास उपलब्ध सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध देश के दूतावासों, संबद्ध देशों की ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उद्योग को जांच शुरुआत करने संबंधी 28 जुलाई, 2006 की अधिसूचना की एक प्रति भेजी। इस जांच के पक्षकारों से निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने और लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया गया था।
 - (ii) उक्त नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देशों के दूतावासों को घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत याचिका की अगोपनीय अंश की प्रतियां प्रदान की गई थीं।
 - (iii) नई दिल्ली में संबद्ध देशों के दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत करने के बारे में सूचना दी गई थी और उनसे यह अनुरोध किया गया था कि वह अपने देशों/क्षेत्रों के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का जवाब निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें। निर्यातकों के नाम एवं पत्तों सहित निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका तथा प्रश्नावली की एक प्रति भी उनको भेजी गई थी।
 - (iv) नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों से संगत सूचना मांगने के लिए प्राधिकारी द्वारा एक प्रश्नावली भेजी गयी थी। तथापि, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के किसी भी निर्यातक से प्रश्नावली का उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है।
 - (v) भारत में संबद्ध माल के ज्ञात आयातकों और उपभोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गयी थीं जिनमें नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगी गयी थी। तथापि, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के किसी भी आयातक से प्रश्नावली का उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है।
 - (vi) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएण्डएस) से भी अनुरोध किया गया कि वह जांच की अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे प्रस्तुत करें।
 - (vii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश उसके द्वारा रखी गयी सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।
 - (viii) आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना और सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर उत्पादन की ईष्टतम लागत तथा भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत अनन्तिम रूप से निकाली गयी थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग को हुई क्षति की समाप्ति के लिए पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।

(ix) भारत जनवादी गणराज्य के संबंध में गैर बाजार अर्थव्यवस्था की परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए नियमावली के अनुबंध I के पैराग्राफ 7 के अनुरूप प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को उचित तीसरे देश के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रस्तावित चयन के बारे में अपने दिनांक 21 दिसम्बर, 2006 के पत्र के माध्यम से अधिसूचित किया और उनसे इस बारे में उनकी टिप्पणियाँ आमंत्रित कीं। तथापि, इस संबंध में किसी भी हितबद्ध पक्षकार से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई है।

(x) विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के संबंध में उनके द्वारा प्रस्तुत गोपनीयता संबंधी दावों की जांच की गई है। ऐसी सूचना जिसकी प्रकृति गोपनीय है अथवा जिसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर उसके अगोपनीय सारांश सहित प्रस्तुत किया गया है, उसे अगोपनीय माना गया है। **** से इस जांच परिणाम में घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का पता चलता है और प्राधिकारी ने उसे नियमानुसार गोपनीय ही माना है।

(xi) जांच में 1 जनवरी, 2005 से 31 दिसम्बर, 2005 तक की अवधि शामिल थी।

ग. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

4. इस जांच में विचाराधीन उत्पाद पेरॉक्सो सल्फेट्स (परसल्फेट्स) के नाम से भी ज्ञात है। वर्तमान जांच में परसल्फेट्स की तीन किस्मों को शामिल किया गया है, जो हैं :-

- I) अमोनियम परसल्फेट (एपीएस), $\{(NH_4)_2S_2O_8\}$,
- II) पोटेशियम परसल्फेट (पीपीएस), $\{K_2S_2O_8\}$; और
- III) सोडियम परसल्फेट (एसपीएस), $\{Na_2S_2O_8\}$

5. ये परसल्फेट्स अल्कली धातु लवणों के रूप में उत्पादित अत्यधिक संबंधित यौगिकों का एक समूह है। ये अत्यधिक संवेदनशील और कार्यक्षम ऑक्सीकरण पदार्थ हैं और इनसे अत्यंत कार्यक्षम ढंग एवं सरलता से सक्रिय ऑक्सीजन का निस्सारण होता है। सभी तीनों परसल्फेट्स का विनिर्माण इलेक्ट्रोकेमिकली किया जाता है और वस्त्र एवं रसायन उद्योगों में प्रारंभिक एवं ऑक्सीकरण पदार्थ के रूप में इसके समान एवं प्रतिस्थापनीय अंतिम उपयोग हैं। सभी परसल्फेट्स को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 में उपशीर्ष 283340 के अंतर्गत और भारतीय व्यापार वर्गीकरण (सुमेलीकृत वस्तु विवरण और कोडिंग प्रणाली) के अंतर्गत उपशीर्ष 28334000 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, उपर्युक्त वर्गीकरण मात्र सांकेतिक है और इस जांच के कार्यक्षेत्र पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

6. यद्यपि जांच में शामिल परसल्फेट्स की तीनों किस्मों का रासायनिक संघटन अलग-अलग है तथापि, आवेदकों ने तर्क दिया है कि परसल्फेट्स की तीनों किस्मों को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि इन परसल्फेट्स की विनिर्माण प्रक्रिया और अंतिम उपयोग एक ही है। इस संबंध में आवेदकों ने तर्क दिया है कि अमेरिका तथा यूरोपीय प्राधिकारियों ने उन देशों में इन उत्पादों को जांच में इसी प्रकार से माना है। ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिका तथा ईयू में इस उत्पाद की जांच की गई थी और उस पर शुल्क लगाया गया था जिसमें यह माना गया था कि उत्पाद क्षेत्र में तीनों किस्में शामिल थीं।

और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि ये तीन किस्में और कुछ नहीं बल्कि अलग-अलग किस्मों वाला एक ही उत्पाद हैं, तीनों किस्मों पर एक ही शुल्क लगाया गया था। विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र या समान वस्तु के संबंध में किसी हितबद्ध पक्षकार से कोई तर्क प्राप्त नहीं हुआ है। उत्पाद तथा आवेदक द्वारा प्रस्तुत आयात आंकड़ों की जांच से यह संकेत मिलता है कि परसल्फेट्स की तीनों किस्मों का भारत में आयात किया जा रहा है हालाँकि इन उत्पादों की कीमतों में बहुत अधिक अंतर है। आवेदक द्वारा दिए गए अभ्यावेदन के अनुसार अलग-अलग परसल्फेट्स के अनुप्रयोग क्षेत्र भेषज तथा अन्य अनुप्रयोग क्षेत्रों में उत्पाद के अनुप्रयोग में काफी समानता को दर्शाते हैं। विनिर्माण प्रक्रिया में समानता और अनुप्रयोग क्षेत्रों में प्रतिस्थापनीयता को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी अनन्तिम रूप से यह मानते हैं कि परसल्फेट्स की इन तीनों किस्मों को इस मामले में "विचाराधीन उत्पाद" को परिभाषित करने के प्रयोजनार्थ एकसमान एवं एक ही उत्पाद माना जाना अपेक्षित है।

घ घरेलू उद्योग और संबंधित योग्यता

7. यह आवेदन मै. गुजरात परसाल्ट्स प्रा. लि. अहमदाबाद, मै. कैलिबर कैमिकल्स प्रा. लि., मुम्बई और मै. योयो कैमिकल्स अहमदाबाद द्वारा किया गया है और आवेदकों का भारत में संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन में सामूहिक रूप से 50% से अधिक हिस्सा है। तथापि, यह देखा गया है कि जांच अवधि के दौरान मै. योयो कैमिकल्स ने 20 मी. टन सोडियम सल्फेट का आयात किया है। जांच अवधि के दौरान गुजरात परसाल्ट्स प्रा. लि. ने 40 मी. टन अमोनियम परसल्फेट्स का और 21 मी. टन सोडियम परसल्फेट्स का आयात किया है। इन दो आवेदकों के आयात उनके अपने उत्पादन का लगभग 10% बनते हैं और इन आयातों के एक भाग का प्रयोग आगे के उत्पादन के लिए किया गया है जबकि बाकी के भाग की घरेलू बाजार में बिक्री की गई है। आवेदकों ने तर्क दिया है कि यदि इन दो आवेदकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा न भी माना जाए तो जांच अवधि के दौरान 1400 मी. टन का उत्पादन करने वाले मै. कैलिबर कैमिकल्स का हिस्सा भारत में संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन के 50% से अधिक का बनता है और इसलिए वे आवेदन प्रस्तुत करने की योग्यता को पूरा करते हैं।

8. प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 2(घ) में उन घरेलू उत्पादकों को घरेलू उद्योग के हिस्से के रूप में शामिल करके विचार करने पर कोई प्रतिबंध नहीं है जिन्होंने संबद्ध वस्तु का आयात किया था। वर्तमान मामले में दो आवेदक घरेलू उत्पादकों ने काफी मात्रा में आयात किया है, परन्तु जांच अवधि के दौरान उनके द्वारा आयातित मात्रा उनके अपने उत्पादन का लगभग 10% है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि घरेलू उद्योग के क्षति विश्लेषण में घरेलू उत्पादकों के उतने आंकड़ों पर विचार किया जाना चाहिए जितना अधिक से अधिक संभव हो, प्राधिकारी का यह विचार है कि क्षति निर्धारण के लिए इन उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा माना जाना चाहिए। तदनुसार, प्राधिकारी अनन्तिम रूप से यह मानते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग का निर्माण करते हैं और नियमों के अर्थ के भीतर जांच के प्रयोजनार्थ आवेदन प्रस्तुत करने की योग्यता रखते हैं।

ड. न्यूनतम से कम सीमा

9. प्राधिकारी द्वारा वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) और दूसरे स्रोतों से प्राप्त आयात आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात न्यूनतम सीमा स्तर से अधिक रहे हैं।

च. अन्य अनुरोध एवं उठाए गए मुद्दे

10. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन या जापान में संबद्ध वस्तु के न तो किसी उत्पादक ने और न ही भारत के उपभोक्ता या आयातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर दिया है और न ही किसी पक्ष ने मौजूदा जांच से संबंधित संगत सूचना प्रदान की है।

छ. पाटन मार्जिन का निर्धारण

11. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों के नियम 6.8 में प्रावधान है कि यदि एक हितबद्ध पक्ष उचित अवधि के भीतर आवश्यक सूचना प्रदान करने से या अन्यथा मना करता है या जांच में अवरोध उत्पन्न करता है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी अपने परिणामों को उपलब्ध तथ्यों के आधार पर रिकॉर्ड कर सकते हैं।

12. अनुबंध 11 के पैराग्राफ- 1 के साथ पठित इस करार के अनुच्छेद 6.8 में प्रावधान है कि जितनी जल्दी संभव हो सके जांच की शुरुआत के पश्चात जांच प्राधिकारियों को हितबद्ध पक्ष से अपेक्षित सूचना के ब्यौरों और हितबद्ध पक्ष द्वारा अपने उत्तर में देने वाली सूचना के प्रारूप के तरीके को विनिर्दिष्ट करना चाहिए। प्राधिकारी को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि पक्ष इस बात की जानकारी रखता है कि यदि सूचना उचित समय के भीतर उपलब्ध नहीं कराई गई तो प्राधिकारी उपलब्ध तथ्यों के आधार पर जिसमें घरेलू उद्योग द्वारा जांच शुरुआत के आवेदन में निहित तथ्य भी शामिल हैं, निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश के निर्यातक और संबंधित सरकारों द्वारा निर्धारित प्रारूप में और तरीके से सूचना प्रस्तुत करने की अपेक्षाओं को उचित रूप से अधिसूचित किया गया है और पक्षों को पर्याप्त मौका भी दिया गया था ताकि वे इस संबंध में अनुरोध प्रस्तुत कर सकें। इसलिए, संबद्ध देशों से सहायता न मिलने की स्थिति में प्राधिकारी ने संबद्ध देश के संबंध में पाटन मार्जिन का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया है।

612 GI/07-2

क. चीन जन. गण.**सामान्य मूल्य**

14. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार सामान्य मूल्य पर कोई उत्तर या सूचना नहीं दी है या चीनी निर्यातकों के विरुद्ध गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की परिकल्पना का खण्डन किया है। इसलिए, प्रारंभिक निष्कर्षों के प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने नियमों के अनुबंध - 1 के पैरा - 7 के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का अनंतिम अनुमान लगाया है।

याचिकाकर्ताओं ने यूएसए को एक प्रतिनिधि देश के रूप में अभिज्ञात किया है और यूएसए में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादकों में से एक उत्पादक मैसर्स एफएमसी कैमिकल कॉर्पोरेशन, यूएसए को नियमों के अनुबंध - 1 के पैरा 7 के अनुसार संबद्ध वस्तु की सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु एक प्रतिनिधि के रूप में स्वीकृति दी है। प्राधिकारी की जानकारी में यह लाया गया था कि विश्व में संबद्ध वस्तु के बहुत कम उत्पादक हैं और मैसर्स एफएमसी कॉर्पोरेशन यूएसए के संबद्ध वस्तु के उत्पादकों में से एक उत्पादक हैं जो इस जांच में सहायता करने हेतु सहमत हुए हैं। तदनुसार, प्राधिकारी ने मैसर्स एफएमसी कैमिकल कॉर्पोरेशन यूएसए से अनुरोध किया है कि वह उपरोक्त प्रयोजनार्थ उपरोक्त नियमानुसार प्रतिनिधि देश के रूप में अधिसूचित होने से पहले संगत सूचना उपलब्ध करा दे। मैसर्स एफएमसी कॉर्पोरेशन ने नियमों के अनुबंध 1 के पैरा 7 के प्रधान परंतुक के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु अपनी लागत एवं घरेलू बिक्री सूचना प्रदान की है। तदनुसार, प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों को नियमानुसार प्रतिनिधि देश के रूप में अधिसूचित किया है। तथापि, इस मुद्दे पर किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गई है।

15. अमरीका के प्रतिनिधि उत्पादक ने तीनों प्रकार के उत्पादों के लिए अपनी घरेलू बिक्री कीमत और उत्पादन लागत उपलब्ध कराई है। घरेलू उद्योग ने भी संबद्ध वस्तु के उत्पादन की परिकलित लागत तथा उचित लाभ मार्जिन के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का दावा किया है। प्रतिनिधि उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना में कुछ कमियाँ पाई गई हैं। प्राधिकारी ने प्रतिनिधि उत्पादकों की लागत और कीमतों तथा घरेलू उद्योग द्वारा दावा किए गए सामान्य मूल्य के बीच तीनों प्रकार के उत्पादों में पर्याप्त अंतर पाया है। अतः प्रतिनिधि उत्पादक द्वारा प्रदत्त सूचना की आगे और जांच एवं सत्यापन/मिलान होने तक प्राधिकारी ने नियमों के अनुबंध - 1 के पैरा 7 के दूसरे परंतुक के अनुसार चीन में सामान्य मूल्य का अनंतिम परिकलन किया है। तदनुसार, चीन के सभी निर्यातकों के लिए विचाराधीन उत्पाद का कारखाना द्वार पर सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

उत्पाद की किस्म	परिकलित सामान्य मूल्य मि. अम. डा./कि.ग्रा.	
अमोनियम परसल्फेट	*****	
पोटाशिम परसल्फेट	*****	
सोडियम परसल्फेट	*****	

निर्यात कीमत

16. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के किसी भी निर्यातक ने उस कीमत के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है जिस कीमत पर भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात किया गया है। उपर्युक्त

परिस्थितियों में प्रत्येक निर्यातक के लिए अलग से निर्यात कीमत का निर्धारण करना संभव नहीं है। डीजीसीआईएंडएस से भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में विस्तृत सूचना उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था जिसे प्राप्त कर उसका विश्लेषण किया गया है। अतः डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार सभी आयातों की भारत औसत निर्यात कीमत के आधार पर निर्यात कीमत निकाली गई है। अमोनियम परसल्फेट, सोडियम परसल्फेट और पोटैशियम परसल्फेट के लिए अलग-अलग निर्यात कीमत निकाली गई है। उक्त देश के किसी सहयोगी निर्यातक से पूर्ण सूचना के अभाव में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर डीजीसीआईएंडएस द्वारा सूचित सीआईएफ मूल्यों में से अंतर्देशीय परिवहन, समुद्री भाड़े और बीमा के लिए समायोजनों की अनुमति देने के बाद कारखाना द्वार पर निवल निर्यात कीमत निर्धारित की गई है। तदनुसार, कारखाना द्वार पर निवल निर्यात कीमत अनंतिम रूप से निम्नानुसार निर्धारित की गई है :-

उत्पाद की किस्म	निवल निर्यात कीमत मि. अम. डा./कि.ग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	*****
पोटाशिम परसल्फेट	*****
सोडियम परसल्फेट	*****

पाटन मार्जिन

17. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ अनंतिम रूप से इस प्रकार निर्धारित कारखाना सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत की तुलना उत्पाद के अलग-अलग प्रकारों के लिए व्यापार के उसी स्तर पर की गई है। तत्पश्चात्, विचाराधीन उत्पाद के लिए समग्र रूप से भारत औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है। तदनुसार, चीन जन. गण. के सभी निर्यातकों के लिए भारत औसत पाटन मार्जिन का अनंतिम निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

उत्पाद की किस्म	आयात मात्रा कि. ग्रा. में	पाटन मार्जिन मि. अम. डा./कि.ग्रा.	पाटन मार्जिन %
अमोनियम परसल्फेट	*****	*****	
पोटाशिम परसल्फेट	*****	*****	
सोडियम परसल्फेट	*****	*****	
भारत औसत पाटन मार्जिन	*****	*****	163%

(ख) जापान

सामान्य मूल्य

18. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जापान के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार सामान्य मूल्य के बारे में कोई उत्तर या सूचना प्रदान नहीं की है। अतः प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय एवं उचित लाभ सहित उत्पादन लागत के अनुमान के साथ उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का अनुमान लगाया है। तदनुसार, जापान के सभी निर्यातकों के लिए कारखाना सामान्य मूल्य का अनंतिम निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

उत्पाद की किस्म	परिकलित सामान्य मूल्य मिलि.अम.डा./किग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	*****
पोटाशियम परसल्फेट	*****
सोडियम परसल्फेट	*****

निर्यात कीमत

19. जापान से किसी सहयोग के अभाव में प्राधिकारी ने डी जी सी आई एस की सूचना के अनुसार जापान से हुए आयातों के संबंध में समस्त तुलनीय सौदों की भारित औसत निर्यात कीमत निकाली है। इस प्रकार से निर्धारित निर्यात कीमत सी आई एफ निर्यात कीमत होने के कारण कारखाना निर्यात कीमत निकालने के लिए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अंतर्देशीय परिवहन, समुद्री भाड़े और बीमा के लिए समायोजन लागू किए गए हैं। तदनुसार, कारखाना स्तर पर निवल निर्यात कीमत का अंतिम निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:-

उत्पाद की किस्म	निवल निर्यात कीमत मिलि.अम.डा./किग्रा.
अमोनियम परसल्फेट	*****
पोटाशियम परसल्फेट	--
सोडियम परसल्फेट	*****

पाटन मार्जिन

20. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए कारखाना सामान्य मूल्य की तुलना व्यापार के उसी स्तर पर इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य के साथ की गई है जो निम्नानुसार बनता है:-

उत्पाद की किस्म	आयात मात्रा किग्रा. में	पाटन मार्जिन मिलि.अम.डा./किग्रा.	पाटन %
अमोनियम परसल्फेट	*****	*****	
पोटाशियम परसल्फेट	-	-	
सोडियम परसल्फेट	*****	*****	
भारित औसत पाटन मार्जिन	*****	*****	177%

छ.1 पाटन मार्जिन संबंधी सारांश

21. इस प्रकार से निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक और न्यूनतम स्तर से ज्यादा पाया गया है। पाटन मार्जिन का सारांश निम्नानुसार है:-

देश	निर्यातक	पाटन मार्जिन मिलि.अम.डा./किग्रा.	पाटन मार्जिन %
चीन जन.गण.	सभी निर्यातक	*****	163%
जापान	सभी निर्यातक	*****	177%

ज. क्षति निर्धारण

22. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी दावे के बारे में किसी भी हितबद्ध पक्ष ने कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया है।

ज.1 क्षति का संचयी आकलन

23. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (ii) में यह अपेक्षा की गई है कि जब एकाधिक देशों के उत्पाद के आयातों की पाटनरोधी जांच एक साथ शुरू की जाती है, तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेंगे, यदि यह निर्धारित हो जाता है कि:

- (i) अलग-अलग देशों के आयात न्यूनतम से अधिक हैं अथवा संचयी रूप से आयातों के 7 प्रतिशत से अधिक हैं;
- (ii) अलग-अलग देशों की पाटन मार्जिन 2 प्रतिशत से अधिक है; और
- (iii) आयातित वस्तु एवं समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के संदर्भ में आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उचित है।

24. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयातों का प्रवेश भारतीय बाजार में संबद्ध देशों सहित अन्य अनेक देशों से एक साथ हो रहा है। अतः उपर्युक्त मानदण्डों के संदर्भ में, इन स्रोतों से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संचयी आकलन के मुद्दे की जांच की गई और यह पाया गया कि:

- (i) संबद्ध देशों में से प्रत्येक से अलग-अलग उत्पादों के पाटन की मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है;
- (ii) संबद्ध देशों में से प्रत्येक से अलग-अलग उत्पादों के आयातों की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है;
- (iii) घरेलू उत्पाद तथा उत्पादकों द्वारा विभिन्न देशों को आपूर्तित उत्पाद समान वस्तुएं हैं;
- (iv) आयातित उत्पाद और घरेलू तौर पर उत्पादित संबद्ध वस्तुएं परस्पर परिवर्तनीय हैं और इनका उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर किया जा रहा है। विभिन्न देशों की आयातों से संबंधित सौदेवार सूचना यह दर्शाती है कि यह आयात इन व्यापारियों द्वारा किया जा रहा है, जिन्होंने यह सामग्री पुनः बिक्री हेतु खरीदी है। संबंधित देशों द्वारा आपूर्तित वस्तुएं भारतीय बाजारों में एक ही वितरण श्रृंखला से प्रवेश कर रही हैं और एक ही बाजार में सीधे प्रतिस्पर्धा कर रही हैं;
- (v) संबद्ध देशों द्वारा आपूर्तित उत्पादों का विपणन भारत में उसी अवधि में उसी बिक्री श्रृंखला से और उन्हीं वाणिज्यिक स्थितियों में किया जा रहा है।

25. अतः प्राधिकारी का यह अनन्तिम अभिमत है कि इस मामले में क्षति का संचयी आकलन करना ही उचित है, क्योंकि संबद्ध देशों के अलग-अलग उत्पाद सीधे एक-दूसरे से तथा घरेलू उद्योग द्वारा भारतीय बाजार के लिए प्रस्तुत समान वस्तुओं से भी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

ज.2 क्षति की जांच एवं कारणात्मक संबंध

26. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II के साथ पठित नियम 11 में यह प्रावधान है कि क्षति निर्धारण करते समय उन कारकों की भी जांच की जाएगी, जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति इंगित करते हैं ".....पाटित आयातों की मात्रा सहित सभी सुसंगत तथ्यों, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव और उसके परिणामस्वरूप ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए....." । कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का विचार करते समय यह जांच करना जरूरी समझा गया है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय मंदी लाने अथवा कीमत वृद्धि को रोकने के लिए है, जो अन्यथा उल्लेखनीय रूप से बढ़ जातीं ।

27. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबंधित आवेदन पैराग्राफ I में यथा वर्णित तीन घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत किया गया है और भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन का 94 प्रतिशत हिस्सा इन उत्पादकों का है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि भारत में संबद्ध वस्तुओं के एक और उत्पादक मेसर्स इलेक्ट्रोकेम इण्डस्ट्रीज हैं, जिनका भारत में संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन का हिस्सा 6 प्रतिशत है । तथापि क्षति निर्धारण तथा समग्र घरेलू उद्योग हेतु क्षति रहित कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इस उत्पादक को अपनी लागत व क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था । तथापि इस उत्पादक द्वारा कोई जानकारी अब तक उपलब्ध नहीं कराई गई है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन में इस उत्पादक के हिस्से का अनुपात बहुत कम है, अतः क्षति तथा क्षति रहित कीमत के निर्धारण पर इसका कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ेगा । भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच हेतु उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले सूचकांकों यथा उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की सीमा तथा मार्जिन आदि पर भी नियमावली के अनुबंध II के अनुसार विचार किया गया है ।

28. जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले समस्त आर्थिक मानदण्डों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा आदि की जांच निम्नानुसार की गई है:-

ज.2.1 पाटित आयातों की मात्रा का प्रभाव : आयात की मात्रा एवं बाजार हिस्सा

(क) आयात की मात्रा

29. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी द्वारा यह विचार किया जाना अपेक्षित है कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के संदर्भ में पाटित आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है ।

30. डी जी सी आई एण्ड एस द्वारा सूचित आंकड़ों में से असंबद्ध आंकड़ों को हटाने के बाद शेष आंकड़ों के आधार पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा का विश्लेषण किया गया है । आयात से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित हैं :-

मात्रा: किग्रा.में

देश	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
चीन जन.गण.	119999	212999	204000	484900	329500
प्रवृत्ति	100	178	170	404	275
जापान	0	54864	36000	72450	72450
प्रवृत्ति	0	100	66	132	132
संबद्ध देशों का योग	119999	267863	240000	557350	401950
प्रवृत्ति	100	223	200	464	335
अन्य देश	79110	53056	104779	78484	91122
प्रवृत्ति	100	67	132	99	115
कुल	199109	320919	344779	635834	493072
प्रवृत्ति	100	161	173	319	248

आंकड़ों का स्रोत: डी जी सी आई एंड एस

31. उपर्युक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि कुल आयात तथा संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों में क्षति की जांच अवधि के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो लगभग 235 प्रतिशत है। संबद्ध देशों से पाटित आयातों का हिस्सा आधार वर्ष में 60 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि के दौरान कुल आयातों का लगभग 82 प्रतिशत हो गया।

(ख) उत्पादन तथा क्षमता उपयोग पर वास्तविक तथा सम्भावित प्रभाव:

32. घरेलू उत्पादन की मात्रा तथा घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालन पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा घरेलू बिक्री के रूप में की गई।

मात्रा: मी.टन

उत्पादन, बिक्री तथा बाजार हिस्सा	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	139	163	163
अन्य की क्षमता	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	100	100	100
उत्पादन (घरेलू उद्योग)	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	103	107	121
घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग (%)	78%	58%	52%	58%
प्रवृत्ति	100	74	66	74
घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	110	110	112
अन्य उत्पादक	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	119	110	110
कुल मांग	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	117	118	129

33. आंकड़े दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की क्षमता में लगभग 63 प्रतिशत वृद्धि हुई है। तथापि उत्पादन में केवल 21 प्रतिशत वृद्धि हुई है, परिणामतः क्षमता उपयोग में उल्लेखनीय गिरावट आई है। यद्यपि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू मांग लगभग 29 प्रतिशत बढ़ गई है, तथापि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री तदनुरूप अवधि में केवल 12 प्रतिशत बढ़ी है। परन्तु पिछले वर्षों के मुकाबले घरेलू बिक्री तकरीबन स्थिर बनी रही है।

(ग) बाजार हिस्से पर वास्तविक तथा सम्भावित प्रभाव:

34. घरेलू बिक्री तथा बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच निम्नानुसार की गई है:-

मात्रा: मी.टन में

विवरण	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
संबद्ध देशों से कुल आयात	120.00	267.86	240.00	401.95
प्रवृत्ति	100	223	200	335
अन्य देश	79.11	53.06	104.78	91.12
प्रवृत्ति	100	67	132	115
कुल आयात	199.11	320.92	344.78	493.07
प्रवृत्ति	100	161	173	248
घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	110	110	112
अन्य उत्पादक	*****	*****	*****	*****
कुल मांग	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	117	118	129
मांग में हिस्सा (सूचीबद्ध)				
संबद्ध देश	100	191	169	260
अन्य देश	100	57	112	89
घरेलू उद्योग	100	94	93	87
अन्य उत्पादक	100	102	93	85

35. यद्यपि घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की मांग में लगभग 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, तथापि कुल मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में लगभग 11 प्रतिशत की कमी आयी है जबकि पाटित आयातों के हिस्से में 12 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जिससे संकेत मिलता है कि पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राओं और बाजार हिस्सों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है।

ज.2.2 पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

36. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों से भारत में समान उत्पाद की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों को एक महत्वपूर्ण मात्राओं तक

कम करना था अथवा कीमत वृद्धि को रोकना था जो एक अत्यधिक मात्रा तक हो गई होती। प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध देशों से सी आई एफ आयात कीमतें निम्नानुसार रही हैं :-

देश	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
	सी आई एफ रु०/किग्रा.	सी आई एफ रु०/किग्रा.	सी आई एफ रु०/किग्रा.	सी आई एफ रु०/किग्रा.
चीन जन.गण.	26.98	27.00	33.95	30.52
जापान		39.19	38.55	38.21
कुल संबद्ध देश	26.98	29.50	34.64	31.91
अन्य देश	48.17	42.34	66.86	44.31
कुल	35.40	31.62	44.43	34.20

37. उपर्युक्त आंकड़ों से पता चलता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की सी आई एफ आयात कीमत में पूर्ववर्ती वर्षों में उर्ध्वगामी प्रवृत्ति प्रदर्शित होने के पश्चात् पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में कमी आयी है।

ज.2.3 कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री

38. प्राधिकारी ने बिक्री कीमत, करों एवं शुल्कों, छूटों, कटौतियों एवं कमीशनों तथा मालभाड़े एवं परिवहन को छोड़कर घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का निर्धारण किया है। आयातों की पहुँच कीमत का निर्धारण 1 प्रतिशत पत्तन प्रभारों और लागू मूल सीमाशुल्क के साथ भारित औसत सी आई एफ कीमत पर विचार करके किया गया है।

सभी परसलफेट्स	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
बिक्रियों की लागत	100	105.62	107.55	113.29
बिक्री कीमत - घरेलू	100	95.932	94.598	93.934
पहुँच मूल्य				
चीन जन.गण.	100	92.362	116.14	104.41
जापान		100	98.348	97.488
कुल संबद्ध देश	100	100.91	118.5	109.15
कीमत कटौती (%)				
चीन जन.गण.				25-35%
जापान				5-15%
कुल संबद्ध देश				20-30%
क्षति रहित कीमत				*****
कीमत कटौती %				
चीन जन.गण.				30-40%
जापान				10-29%
कुल संबद्ध देश				25-35%

612 GI/04-4

39. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि उत्पादन की भारित औसत लागत में लगभग 13 प्रतिशत की वृद्धि होने के बाद भी घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली में क्षति अवधि के दौरान लगभग 6 प्रतिशत की कमी आयी है। संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्य में भी क्षति अवधि के दौरान अत्यधिक वृद्धि प्रदर्शित होने के पश्चात जांच अवधि में गिरावट आयी है। संबद्ध देशों में से प्रत्येक देश से आयातों द्वारा कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री को जांच अवधि के दौरान अत्यधिक पाया गया है।

ज.2.4 कीमत हास और मंदी

40. घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों का कीमत मंदी संबंधी प्रभाव की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली की उत्पादन लागत के साथ तुलना की गई है। आंकड़ों से संकेत मिलता है कि यद्यपि उत्पादन लागत में जांच अवधि के दौरान बढ़ोतरी हुई थी तथापि बिक्री वसूली में कमी आयी थी। अतः यह मालूम होता है कि यद्यपि लागत में वृद्धि हो रही है लेकिन पाटित आयातों के कारण कम होते हुए अपने बाजार हिस्से को बनाये रखने के लिए घरेलू उद्योग अपनी कीमतें कम करने के लिए बाध्य हुआ है। घरेलू उद्योग द्वारा इस कीमत मंदी से घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा हुआ मालूम होता है क्योंकि यह उद्योग घरेलू बाजार में अपनी बढ़ती हुई लागत को प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहा है।

41. उपर्युक्त अनंतिम विश्लेषण से पता चलता है कि पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर समग्र रूप से और इसके बाजार हिस्से में कमी करते हुए घरेलू बाजार की कीमतों में मंदी करके दोनों रूप से पाटित आयातों की मात्रा में वृद्धि के लिहाज से मात्रा और कीमत संबंधी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

ज.3 क्षति संबंधी अन्य कारकों की जांच

42. पूर्ववर्ती खंड में क्षति संबंधी कुछेक कारकों अर्थात् बिक्रियों और बाजार हिस्से में वास्तविक एवं संभावित कमी, आयातों आदि की मात्रा में वास्तविक और संभावित वृद्धि की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने क्षति संबंधी अनिवार्य मानदंडों की निम्नानुसार जांच की है:

(क) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियां

43. जैसा कि पूर्व में नोट किया गया है, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों के लिहाज से घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नानुसार रहा है:-

मात्रा मि. टन में

	2002-03	2003-04	2004-05	जति अवधि
घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	139	163	163
अन्य उत्पादकों की क्षमता	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	100	100	100
घरेलू उद्योग का उत्पादन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	103	107	121
क्षमता उपयोग %	78%	58%	52%	58%
प्रवृत्ति	100	74	66	74
घरेलू बिक्रियां	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	110	110	112
अन्य उत्पादक	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	119	110	110
कुल मांग	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100	117	118	129

44. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पाद के लिए घरेलू मांग में स्थिर वृद्धि के मद्देजर घरेलू उद्योग की क्षमता में वर्ष 2003-2004 और 2004-05 में वृद्धि हुई है। निर्यातों हेतु उत्पादन सहित घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन में भी क्षति अवधि के दौरान लगभग 21% की वृद्धि हुई है। तथापि, क्षमता उपयोग में गिरावट आयी है और यह बिक्री मात्राओं में अनुपातिक रूप से कम वृद्धि होने के कारण बहुत कम रही है: यद्यपि उत्पाद की मांग में लगभग 29% की वृद्धि हुई है।

(ख) लाभ/हानि और निवेशों पर आय

45. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू द्वारा अर्जित लाभ निम्नानुसार रहा था :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
बिक्रियों की औसत घरेलू लागत	रु./मी. टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	108	113
औसत घरेलू बिक्री कीमत	रु./मी. टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	96	95	94
लाभ/हानि	रु./मी. टन	*****	*****	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	42	23	(14)
निवेश	रु./मी. टन	380.13	534.59	580.42	744.91
लगाई गई पूंजी पर आय (एनएफए आधार) %	%	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	Indexed	100.00	46.81	37.93	10.57

46. उपर्युक्त आंकड़ों से पता चलता है कि यद्यपि समग्र उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि हुई है, तथापि उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है और बिक्री कीमतों में गिरावट आई है। अतः आधार वर्ष में प्रति इकाई सकारात्मक लाभ मार्जिन से जांच अवधि में घरेलू उद्योग ने घरेलू बिक्रियों पर निवल घाटा रिपोर्ट किया था घरेलू उद्योग के घरेलू निवेशों पर आय में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आयी है।

(ग) रोजगार और मजदूरी

47. कर्मचारियों की सं. और भुगतान की गई मजदूरी से संकेत मिलता है कि रोजगार में वृद्धि उत्पादन में वृद्धि होने के कारण हुई है जो क्षमता में वृद्धि के अनुरूप है। मजदूरी में आधार वर्ष की तुलना में भी वृद्धि हुई है जिससे घरेलू उद्योग पर मजदूरी के दबाव में कोई अनानुपातिक वृद्धि प्रदर्शित नहीं होती है।

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
		*****	*****	*****	*****
रोजगार (मानव शक्ति)	संख्या				
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	116	119
प्रति व्यक्ति औसत मजदूरी	रु.	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	120	134	153
प्रति व्यक्ति प्रति दिन औसत मजदूरी	रु.	131	157	175	200
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	120	134	153

(घ) माल सूचियां

48. घरेलू उद्योग की मालसूची संबंधी स्थिति से घरेलू उद्योग की मालसूची पर अत्यधिक पकड़ है यद्यपि निर्यात क्रियाकलाप में वृद्धि के कारण औसत स्टॉक में कमी आयी है।

मालसूची	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
आरंभिक स्टॉक	मी. टन	*****	*****	*****	*****
अंतिम स्टॉक	मी. टन	*****	*****	*****	*****
औसत स्टॉक	मी. टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95	73	57
दिनों की बिक्रियों की संख्या के रूप में औसत स्टॉक	संख्या	52	45	35	27

(छ) नकदी प्रवाह

49. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद लाभ निम्नानुसार रहा है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
नकद लाभ- घरेलू	रु./लाख	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	58.99	41.83	5.33
नकद लाभ - घरेलू	रु./लाख	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	53.74	38.01	4.77
विचाराधीन उत्पाद का नकदी प्रवाह	रु./लाख	*****	(*****)	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	(9.83)	5.73	(122.38)

50. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग के नकद लाभों में क्षति अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आयी है।

(ज) उत्पादकता

51. घरेलू उद्योग की उत्पादकता की प्रतिदिन उत्पादन और प्रति कर्मचारी के संदर्भ में निम्नानुसार जांच की गई है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
कुल उत्पादन	मी. टन	*****	*****	*****	*****
प्रतिदिन उत्पादन	मी. टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	107	121
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	*****	*****	*****	*****
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी. टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	92	102

52. यद्यपि प्रति कर्मचारी उत्पादकता कमोबेश आधार वर्ष के समान है लेकिन घरेलू उद्योग की प्रतिदिन उत्पादकता में सुधार हुआ है।

(झ) वृद्धि

53. यद्यपि क्षमता, उत्पादन, बिक्रियों जैसे मानदंडों के लिहाज से घरेलू उद्योग की वृद्धि और उत्पादकता सकारात्मक थी, तथापि बाजार हिस्से, लाभ, नकदी प्रवाह, निवेशों पर आय के लिहाज से यह नकारात्मक थी।

(ञ) नया निवेश जुटाने की क्षमता

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान उत्पाद की मांग में अत्यधिक वृद्धि को स्पष्ट रूप के लिए नये पूंजी निवेश किए हैं। तथापि, घरेलू उद्योग का वित्तीय कार्य निष्पादन अत्यधिक कम हो रहा है जिसका नये निवेश जुटाने की इसकी क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

निवेश	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
विस्तार हेतु पूंजी निवेश	रू./लाख	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	86	28	118

(ट) समग्र मूल्यांकन

55. कारकों के उपर्युक्त प्रारंभिक विश्लेषण से यह संकेत मिलता है कि क्षमता, उत्पादन तथा बिक्री में सुधार, उत्पादन मात्रा एवं बिक्री के साथ-साथ उत्पादन में सुधार के बावजूद घरेलू उद्योग को बाजार हिस्से, निवेश बिक्री वसूली, लाभ प्रदत्ता, निवेश पर आय तथा नकद लाभ में गिरावट के कारण क्षति हुई है। संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही थी जिसके परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई जिसमें बिक्री कीमत में गिरावट हुई यद्यपि उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही थी। घरेलू उद्योग को हुई क्षति वास्तविक तथा उल्लेखनीय है।

(ठ) कारणात्मक संबंध

56. कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत ह्रास तथा ह्रासकारी प्रभावों के संदर्भ में वास्तविक क्षति की मौजूदगी तथा घरेलू उद्योग की कीमतों पर मात्रात्मक तथा कीमत प्रभावों की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने इस बात की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने इस बात की भी जांच की है कि क्या भारतीय नियमों तथा पाटनरोधी करार में सूचीबद्ध की है कि क्या भारतीय नियमों तथा पाटनरोधी करार में सूचीबद्ध अन्य सांकेतिक मानदण्डों से भी घरेलू उद्योग को क्षति पहुँची होगी। अतः निम्नलिखित मानदण्डों की भी जांच की गई है :

(क) अन्य देशों से आयात:- डीजीसीआईएस आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध वस्तुओं का आयात कई ऐसे देशों से किया जा रहा है जो इस जांच में शामिल नहीं हैं। तथापि ऐसे देशों से आयातों की मात्रा या तो नगण्य है अथवा आयात कीमतें, संबद्ध देशों की कीमतों से अधिक हैं और इसलिए घरेलू उद्योग की कीमतों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(ख) मांग में संकुचन:- संबद्ध वस्तुओं की मांग से संपूर्ण क्षति जांच अवधि के दौरान एक अच्छी वृद्धि प्रदर्शित होती है तथा इसलिए, मांग में हुए संभावित संकुचन को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।

(ग) खपत की पद्धति:- किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा खपत की पद्धति में किसी उल्लेखनीय परिवर्तन का आरोप नहीं लगाया गया है।

(घ) प्रतिस्पर्धा की स्थिति:- वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य हैं। याचिकाकर्ता, संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादक है जिनका घरेलू उत्पादन में लगभग 100% हिस्सा है। अतः घरेलू प्रतिस्पर्धा को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है। प्रतिस्पर्धा की स्थिति अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धति संबंधी कोई अन्य साक्ष्य प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है।

(ड) **प्रौद्योगिकी में विकास:-** प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय परिवर्तन संबंधी कोई आरोप नहीं लगाया गया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुँच सकती हो।

(च) **घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन:-**

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
निर्यात बिक्री	मी.टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	108	159

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री उल्लेखनीय है तथा उसमें सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है। तथापि क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ केवल घरेलू बिक्री पर विचार किया गया है तथा घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के कारण हुई क्षति, यदि कोई हो, के लिए पाटित आयातों को जिम्मेदार नहीं माना जा सकता।

(छ) **उत्पादकता:-** घरेलू उद्योग की उत्पादकता में कुल उत्पादन के संदर्भ में सुधार हुआ है। अतः इसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता।

57. उपर्युक्त गैर आरोपण विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि पाटित आयातों के अतिरिक्त किन्हीं अन्य ज्ञात कारकों के कारण घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

ट.1 कारणात्मक संबंध का निर्धारण करने वाले कारक

58. क्षति जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन के विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में संबद्ध देशों से संपादित आयातों के कारण वास्तविक रूप से गिरावट आई है। अतः पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण निम्नलिखित कारणों के आधार पर किया गया है:

क. जांच अवधि, क दौरान संबद्ध देशों से पाटित आयातों की कीमत में उल्लेखनीय वृद्धि के पश्चात अत्यधिक गिरावट आई है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत कटौती हुई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद कीमतों में कमी करने पर बाध्य होना पड़ा था।

ख. घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमतों में कटौती से कम्पनी के लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था।

ग. यद्यपि घरेलू उद्योग ने आयात कीमत में गिरावट के प्रति प्रतिक्रिया जाहिर की थी तथापि उल्लेखनीय सकारात्मक कीमत कटौती के परिणामस्वरूप संबद्ध देशों से आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई थी। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू बाजार के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।

घ. उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही थी तब भी सकारात्मक कीमत, कटौती के कारण बिक्री कीमत में गिरावट आ रही थी। पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग उचित कीमत वृद्धि लागू नहीं कर पा रहा है।

59. अतः प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है तथा यह क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है।

ठ. क्षति एवं क्षति मार्जिन की मात्रा

60. क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत की तुलना निर्यातों के पहुँच मूल्य से की गई है। संबद्ध देशों से निर्यातों के भारित औसत पहुँच कीमत तथा मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

उत्पाद	देश	निर्यातक	क्षति मार्जिन रु प्रति मी. टन	क्षति मार्जिन %
पैरोक्सोसल्फेट्स (परसल्फेट्स)	चीन जन.गण.	सभी निर्यातक	*****	30-40%
पैरोक्सोसल्फेट्स (परसल्फेट्स)	जापान	सभी निर्यातक	*****	10-20%

ड. निष्कर्ष

61. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों तथा किए गए निवेदनों तथा प्राधिकारी द्वारा उपलब्ध कराए गए तथ्यों, जैसा कि इन परिणामों में दर्ज किया गया है की जांच के पश्चात प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचें हैं :-

- संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का भारतीय बाजार में प्रवेश, निर्यातक देशों के घरेलू बाजारों में उनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर हुआ है।
- संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं का पाटन मार्जिन पर्याप्त है तथा न्यूनतम सीमा से अधिक हैं;
- घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है तथा यह क्षति घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध देशों के पाटित आयातों की मात्रा एवं कीमत प्रभाव के कारण हुई थी।

ढ. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

62. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन, सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार पद्धतियों द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली तथा उचित प्रतिस्पर्ध को पुनः बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपायों के

लागू किए जाने से संबद्ध देशों से आयातों में किसी प्रकार से बाधा नहीं पहुँचेगी तथा इसलिए उपभोक्ताओं हेतु उत्पादों की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

ण. सिफारिशें

63. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत के संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था तथा निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था कि वे पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंधों के विभिन्न पहलुओं के विषय में सकारात्मक जानकारी उपलब्ध करवा सकें । निर्धारित नियमों के संदर्भ में पाटन, क्षति एवं पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंधों के बारे में जांच प्रारंभ करने तथा प्रारंभिक जांच परिणाम का निर्धारण करने, तथा संबद्ध देशों के विरुद्ध अनंतिम रूप से सकारात्मक पाटन मार्जिन का निर्धारण करने तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचने के पश्चात की घरेलू उद्योग को ऐसे पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है, प्राधिकारी का यह मत है कि जांच के दौरान घरेलू उद्योग को हो रही क्षति से बचाव के लिए अनंतिम उपाय लागू किया जाना अपेक्षित है ।

64. अतः प्राधिकारी, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में अनंतिम पाटनरोधी शुल्क को लागू किया जाना आवश्यक समझते हैं और नीचे उल्लिखित स्वरूप एवं पद्धति इसको लागू करने की सिफारिश करते हैं ।

65. प्राधिकारी द्वारा कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त किया जा सके । तदनुसार केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की गई अधिसूचना की तारीख से, संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर संलग्न शुल्क तालिका के कॉलम-9 में दी गई राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश की गई है ।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	टैरिफ मद का उपशीर्ष	वस्तु का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	283340	पेरॉक्सोसल्फेट्स	1. अमोनियम परसल्फेट 2. पोटैशियम परसल्फेट 3. सोडियम परसल्फेट	चीन जन. गण.	अन्य	अन्य	अन्य	414	मी. टन	अम. डालर

612 GI/07-6

2	-वही-	-वही-	-वही-	जापान को छोड़कर अन्य	चीन जन. गण	अन्य	अन्य	414	मी. टन	अम. डालर
3	-वही-	-वही-	-वही-	जापान	अन्य	अन्य	अन्य	203	मी. टन	अम. डालर
4	-वही-	-वही-	-वही-	चीन को छोड़कर अन्य	जापान	अन्य	अन्य	203	मी. टन	अम. डालर

च. आगे की प्रक्रिया

66. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:

- (क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पक्षकारों से इन जांच परिणामों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम जांच परिणाम में विचार किया जाएगा;
- (ख) प्राधिकारी द्वारा ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता तथा अन्य ज्ञात संबद्ध हितबद्ध पक्षकारों को अलग से लिखा जा रहा है जो प्रारंभिक जांच परिणामों की प्रकाशन की तारीख से 40 दिन के भीतर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पक्षकार भी अपने विचार इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से चालीस (40) दिनों के भीतर प्रस्तुत कर सकता है।;
- (ग) प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे सत्यापन करेंगे;
- (घ) प्राधिकारी अंतिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे।

क्रिस्टी फेर्नान्डेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 23rd February, 2007

Preliminary Findings

Subject :— Anti-Dumping Investigation involving import of Peroxosulphates (also known as Pesulphates) from China PR and Japan.

F. No. 14/1/2006-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

1. WHEREAS M/s Gujarat Persalts Pvt. Ltd. Ahmedabad, M/s Calibre Chemicals Pvt. Ltd. Mumbai, and M/s Yoyo Chemicals Ahmedabad, (herein after referred to as the applicants) have jointly filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Act, and the Rules, alleging dumping of Peroxosulphates also known as Persulphates (herein after also referred to as subject goods), originating in or exported from the China PR, and Japan (herein after also referred to as subject countries) and requested for initiation of an investigations for levy of anti-dumping duties on the subject goods.

2. AND WHEREAS, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 28th July 2006 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. Procedure

3. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority.

- (i) The Designated Authority sent copies of initiation notifications dated 28th July 2006 to the embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, known importers and other interested parties, and the domestic industry, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to file questionnaire responses and make their views known in writing within prescribed time limit.
- (ii) Copy of the non-confidential version of the petition filed by the domestic industry was made available to the known exporters and the Embassies of the subject countries in accordance with Rules 6(3) supra.
- (iii) The Embassies of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries/territories to respond to the questionnaire within the prescribed time. Copies of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter were also sent to the Embassies of subject countries along with a list of known exporters/ producers.
- (iv) The Authority sent questionnaire, to elicit relevant information, to the known exporters from subject countries in accordance with the rule 6(4). However, no questionnaire response has been received from any exporters of the subject goods from the subject countries.
- (v) Questionnaires were sent to the known importers and Consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4). However, no questionnaire response has been received from any importer of the subject goods from the subject countries.
- (vi) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigations;
- (vii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- (viii) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the petitioner on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out provisionally so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;

- (ix) In view of the Non-Market Economy presumptions in respect of People's Republic of India, in terms of Paragraph 7 of the Annex 1 of the Rules, the Authority notified the interested parties proposed selection of United States of America as the appropriate third country vide letter dated 21st December 2006 inviting comments of the interested parties. However, no comment has been received from any interested party in this respect.
- (x) The confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them have been examined. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties, alongwith non-confidential summary thereof, has been treated confidential *** in this finding represents information furnished by the domestic industry on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- (xi) Investigation was carried out for the period starting from 1.1.2005 to 31.12.2005 (POI).

C. Product under Consideration and Like Article

4. The product under consideration in this investigation is Peroxosulphates (also known as Persulphates). Three types of persulphates have been included in the present investigation, which are:

- I) Ammonium Persulphate (APS), (NH₄)₂S₂O₈)
- II) Potassium Persulphate (PPS) (K₂S₂O₈); and
- III) Sodium Persulphate (SPS) (Na₂S₂O₈).

5. These Persulphates are a group of closely related compounds produced as Alkali Metal salts. These are the most sensitive and efficient oxidizing agents and releases active oxygen very efficiently and easily. All the three persulphates are manufactured electrochemically and have the same or substitutable end-uses as an initiator and oxidizing agent in the textile and chemical industries. All Persulphates are classified in Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975 under subheading 2833 40 and under subheading 283340 00 under the Indian Trade Classification (Based on Harmonized Commodity Description and Coding system). However, the above classification is indicative only and is no way binding on the scope of this investigation.

6. Though the chemical compositions of the three types persulphates included in the investigation are different, the applicants have argued that all the three types of persulphates should be included within the scope of the product under consideration as the manufacturing process and end use of the persulphates are same. In this connection the applicants have argued that the US and EU Authorities have given similar treatment to these products investigated in those countries. It appears that the product was investigated

and duties imposed in the USA and EU, wherein it was held that the product scope included all three types and one duty imposed on three types, considering the three types as nothing but one product having different types. No argument has been received from any interested party on the scope of product under consideration or like article. Examination of the product and import data submitted by the applicant indicates that all the three types of persulphates are being imported to India though the prices of the products vary significantly. The application areas of the individual persulphates, as submitted by the applicants, indicate significant overlap of application of the product in pharmaceutical, and other application areas. In view of the similarity in manufacturing process and substitutability in application areas, the Authority provisionally holds that the three types of persulphates are required to be treated as alike and one product for the purpose of defining the 'product under consideration' in this case.

D. Domestic Industry and Standing

7. The application has been filed by M/s Gujarat Persalts Pvt. Ltd. Ahmedabad, M/s Calibre Chemicals Pvt. Ltd. Mumbai and M/s Yoyo Chemicals Ahmedabad, and the applicants collectively account for more than 50% of the domestic production of the subject goods in India. However, it has been noticed that M/s Yoyo Chemicals has imported 20MT of Sodium Sulphate during the POI. Gujarat Persalts Pvt. Ltd has imported 40 MT of Ammonium Persulphates and 21 MT of Sodium Persulphates during the POI. The imports of these two applicants constitutes about 10% of their own production and part of this imports has been used for further production, while a part of it has been sold in the domestic market. The applicants have argued that even if these two producers are not considered as a part of the domestic industry, M/s Calibre Chemicals, having a production of about 1400 MT of production during POI, commands more than 50% of total production of the subject goods in India and therefore, commands the standing to file the application.

8. The Authority notes that Rule 2(b) does not prohibit inclusion of the domestic producers, who had imported the subject goods, to be considered as a part of the domestic industry. In the instant case two of the applicant domestic producers have imported substantial quantities, but the quantity imported is about 10% of their own production during the period of investigation. In view of the fact that injury evaluation of the domestic industry should take into account as much data of the domestic producers as possible, the Authority is of the view that these producers are to be considered as a part of the domestic industry for injury determination. Accordingly, the Authority provisionally holds that the applicants constitute the domestic industry and command the standing for filing the application for the purpose of this investigation, within the meaning of the Rules.

E. De Minimis Limits

9. As per the import data received by the Authority from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and other secondary sources, the imports of the subject goods from the subject countries are above the de minimis level.

F. Other submissions and issues raised

10. The Authority notes that none of the producers of the subject goods in China or Japan and consumers, or importers in India has responded to the Designated Authority, nor has any party provided any information relevant to the present investigations.

G. Determination of Dumping Margin

11. The Authority notes that Rule 6.8 of the antidumping Rules provide that in a case where an interested party refuses access to, or otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the designated authority may record its findings on the basis of the facts available to it.

12. Article 6.8 of the Agreement, read with paragraph 1 of Annex II, provides that as soon as possible after the initiation of the investigation, the investigating authorities should specify in detail the information required from any interested party, and the manner in which that information should be structured by the interested party in its response. The authorities should also ensure that the party is aware that if information is not supplied within a reasonable time, the authorities will be free to make determinations on the basis of the facts available, including those contained in the application for the initiation of the investigation by the domestic industry.

13. The Authority notes that the exporters in the subject countries and the respective Governments have been adequately notified about the requirement of submission of information in the form and manner prescribed and adequate opportunity was also granted to the parties to make their submissions in this regard. Therefore, in the absence of cooperation from the subject countries, the authority has determined the dumping margins in respect of the subject countries on the basis of facts available.

a) China PR**Normal Value**

14. The Authority notes that none of the exporters/producers from China PR has provided any response or information on the normal value as per the prescribed questionnaire, or rebutted the non-market economy presumption

against Chinese exporters. Therefore, for the purpose of the preliminary finding, the authority has provisionally estimated the normal value in China on the basis of Para-7 to Annexure-I to the Rules.

Petitioners had identified USA as the surrogate country and provided the consent of M/s FMC Chemical Corporation, USA, one of the producers of the product under consideration in USA, to act as the surrogate for determination of the normal value of the subject goods in terms of para 7 of Annexure I of the Rules. It was brought to the notice of the Authority that there are very few producers of the subject goods in the world and M/s FMC Corporation USA is one of the leading producers of the subject goods who has agreed to cooperate in this investigation. Accordingly, the Authority made a request to M/s FMC Chemical Corporation, USA, to provide relevant information before notifying the surrogate country for the above purpose, in terms of the above Rules. M/s FMC Corporation has provided its cost and domestic selling information for determination of the normal value in terms of first proviso of para 7 of the Annexure 1 of the Rules. Accordingly, Authority notified the interested parties about the selection of the surrogate country in terms of the above Rules. However, no response has been received from any interested party on this issue.

15. The surrogate producer in the USA has provided its domestic selling prices and cost of production for all three product types. The domestic industry has also claimed normal value in China based on constructed cost of production of the subject goods and a reasonable profit margin. Certain discrepancies in the information submitted by the surrogate producers have been noticed. The Authority also found a significant difference in the cost and prices of the surrogate producers and the constructed normal value claimed by the domestic industry in all three product types. Therefore, pending further investigation and verification/reconciliation of information provided by the surrogate producer, the Authority has provisionally constructed the normal value in China in terms of second proviso of para 7 of Annexure 1 to the Rules. Accordingly, the ex-works Normal Value of the product under consideration for all exporters from China has been provisionally determined as follows:

Product Type	Constructed Normal Value	US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****	
Potassium Persulphate.	*****	
Sodium Persulphate	*****	

Export Price

16. The Authority notes that none of the exporters from China has provided any information with regard to the price at which the subject goods have been exported to India. Under the above circumstances, it is not possible to determine export price separately for each exporter. The DGCI&S was

requested to provide detailed information with regard to imports of the subject goods in India, which has been received and analysed. Therefore, export price has been worked out on the basis of weighted average export price of all imports as per information provided by DGCI&S. Separate export price has been determined for Ammonium Persulphate, Sodium Persulphate and Potassium Persulphate. The net ex-factory export price, has been determined after allowing for adjustments towards inland transportation, ocean freight and insurance from the CIF value reported by DGCI&S, on facts available basis, in the absence of complete information from any cooperative exporter from that country. Accordingly, net-export price at the ex-factory level has been provisionally determined as follows:

Product Type	Net Export Price US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****
Potassium Persulphate.	*****
Sodium Persulphate	*****

Dumping Margin

17. For the purpose of determination of dumping margin the ex-works normal value and export prices so determined provisionally have been compared at the same level of trade for individual product types and thereafter weighted average dumping margin has been determined for the product under consideration as a whole. Accordingly, the weighted average dumping margin for all exporters from China PR has been provisionally determined as follows:

Product Type	Import Quantity in Kg	Dumping Margin US\$/Kg	DM %
Ammonium Persulphate	*****	*****	
Potassium Persulphate.	*****	*****	
Sodium Persulphate	*****	*****	
Weighted average dumping margin	*****	*****	163%

b) Japan

Normal Value

18. The Authority notes that none of the exporters/producers from Japan has provided any response or information on normal value as per the prescribed questionnaire. Therefore, for the purpose of the preliminary determination the Authority has estimated the normal value based on facts available as per estimates of cost of production, including selling, general & administrative expenses and reasonable profit. Accordingly, the ex-works Normal Value of the subject goods for all exporters from Japan has been provisionally determined as follows:

612 GI/07-8

Product Type	Constructed Normal Value US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****
Potassium Persulphate.	*****
Sodium Persulphate	*****

Export Price

19. In the absence of any cooperation from Japan, the Authority has worked out the weighted average export price of all comparable transaction in respect of imports from Japan as reported by DGCIS. The export price so assessed, being the CIF export price, adjustments towards inland transportation, ocean freight and insurance has been applied based on the facts available to arrive at ex-works export price. Accordingly, net-export price at the ex-factory level has been provisionally determined as follows:

Product Type	Net Export Price US\$/Kg
Ammonium Persulphate	*****
Potassium Persulphate.	-
Sodium Persulphate	*****

Dumping Margin

20. The ex-works normal value has been compared with the normal value so determined at the same level of trade to determine the dumping margin which works out as follows:

Product Type	Import Quantity in Kg	Dumping Margin US\$/Kg	DM %
Ammonium Persulphate	*****	*****	
Potassium Persulphate.	-	-	
Sodium Persulphate	*****	*****	
Weighted average dumping margin	*****	*****	177%

G.1 Dumping Margin Summary

21. The dumping margins so determined have been found to be significant and above the de minimis levels. Summary of dumping margins are as follows:

Country	Exporter	Dumping Margin US\$/Kg	DM %
China PR	All Exporters	*****	163%
Japan	All Exporters	*****	177%

H. INJURY DETERMINATION

22. The Authority notes that no argument has been made by any interested party on the injury claims of the domestic industry.

H.1 Cumulative assessment of injury

23. The Annexure II (iii) of the Anti Dumping Rules requires that where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that

- I) The imports from individual countries are above de minimis or cumulatively account for more than 7% of imports;
- II) The dumping margin against individual countries are above 2%; and
- III) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles

24. The Authority notes that the dumped imports are entering the Indian market simultaneously from a number of countries, including the subject countries. Therefore, the issue of cumulative assessment of the injury caused to the domestic industry due to dumped imports from these sources has been examined with respect to the above parameters and it was observed that:

- i) The margins of dumping of individual products from each of the subject countries are more than the de minimis limit;
- ii) The volume of imports of individual products from each of the subject countries is more than the limits prescribed;
- iii) The domestic product and product supplied by producers in various countries are like articles;
- iv) Imported products and domestically produced subject goods are interchangeable and are being interchangeably used. Transaction wise information on imports from various countries shows that the imports are being made by the traders who have purchased the material for reselling. Goods supplied by the countries involved are entering the Indian markets through the same channels of distributions and directly competing in the same market;

- v) Products supplied from the subject countries are being marketed in India during the same period through comparable sales channels and under similar commercial conditions;

25. Therefore, the Authority provisionally holds that cumulative assessment of injury is appropriate in this case since the exports of individual products from the subject countries are directly competing amongst themselves, as well as with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market.

H.2 Examination of Injury and Causal Link:

26. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure –II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

27. The Authority notes that the application for imposition of antidumping duty has been filed by three domestic producers as recorded in paragraph 1 and these producers command about 94% of total production of the subject goods in India. The Authority also notes that there is another producer of the subject goods in India i.e., M/s Electrochem Industries which commands about 6% of total production of the subject goods in India. However, for the purpose of injury determination and determination of non-injurious price for the domestic industry as a whole, this producer was asked to provide its cost and injury information. However, this producer has failed to file any information so far. The Authority notes that since this producer commands a very small proportion of the total production of the subject goods its data would not have any significant impact on the injury and non-injurious price determination. Therefore, the cost and injury information of the applicant domestic producers have been examined for injury determination. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Rules.

28. All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above such as production, capacity utilization, sales volume etc. have been examined as under:-

H.2.1 Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and market shares

a) Import Volumes

29. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

30. Volume of imports of the subject goods from the subject countries have been analysed based on the data reported in the DGCI&S data after pruning the data for unrelated products. The import figures are as under:-

Quantity in Kgs					
Country	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI
China PR	119999	212999	204000	484900	329500
Trend	100	178	170	404	275
Japan	0	54864	36000	72450	72450
Trend	0	100	66	132	132
Total Subject countries	119999	267863	240000	557350	401950
Trend	100	223	200	464	335
Other Countries	79110	53056	104779	78484	91122
Trend	100	67	132	99	115
Total	199109	320919	344779	635834	493072
Trend	100	161	173	319	248

Data Source: DGCI&S

31. The above data indicates that total imports and dumped imports of the subject goods from the subject countries have increased substantially during the injury examination period by about 235%. The share of dumped imports from the subject countries has increased from 60% in the base year to about 82% of the total imports during the POI.

b) Actual and potential effect on production and capacity utilization:

32. The volume of domestic production and effects of dumped imports on the domestic operation of the domestic industry have been examined in terms of total production, capacity utilization and domestic sales of the domestic industry.

Qty in MT				
Production, Sales and Market Share	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Installed Capacity of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	139	163	163
Capacity of others	*****	*****	*****	*****
Trend	100	100	100	100
Production (DI)	*****	*****	*****	*****

612 GI/07-9

Trend	100	103	107	121
Capacity Utilization DI (%)	78%	58%	52%	58%
Trend	100	74	66	74
Domestic Sales of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	110	110	112
Other Producers	*****	*****	*****	*****
Trend	100	119	110	110
Total Demand	*****	*****	*****	*****
Trend	100	117	118	129

33. The data indicates that the domestic industry's capacity has increased by about 63% compared to the base year. However, the production has increased by only 21% resulting in significant decline in capacity utilization. While domestic demand has increased by about 29% compared to the base year, the sale of the domestic industry during the corresponding period increased by only 12% compared to the base year. But compared to the previous years the domestic sales have remained more or less stagnant.

c) Actual and potential effect on market share:

34. Effects of the dumped imports on the domestic sales and market shares have been examined as follows:

Qty in MT

Particulars	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Total Import Subject Countries	120.00	267.86	240.00	401.95
Trend	100	223	200	335
Other Countries	79.11	53.06	104.78	91.12
Trend	100	67	132	115
Total Import	199.11	320.92	344.78	493.07
Trend	100	161	173	248
Domestic Sales DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	110	110	112
Other Producers	*****	*****	*****	*****
Total Demand	*****	*****	*****	*****
Trend	100	117	118	129
Share in Demand (Indexed)				
Subject countries	100	191	169	260
Other countries	100	57	112	89
Domestic Industry	100	94	93	87
Other Producers	100	102	93	85

35. While the demand of the subject goods in the domestic market has increased by about 29%, the share of the domestic industry in the total demand has declined by about 11% compared to the base year while the share of the dumped imports have increased by 12% indicating that the dumped imports have significantly impacted the domestic industry's sales volumes and market shares.

H.2.2 Price effect of dumped imports

36. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The Authority finds that the CIF import prices from the subject countries have been as under:-

Country	2002-03	2003-04	2004-05	POI
	CIF Rs/KG	CIF Rs/KG	CIF Rs/KG	CIF Rs/KG
China PR	26.98	27.00	33.95	30.52
Japan		39.19	38.55	38.21
Total Subject countries	26.98	29.50	34.64	31.91
Other Countries	48.17	42.34	66.86	44.31
Total	35.40	31.62	44.43	34.20

37. The above data indicates that the CIF import price of the subject goods from the subject countries have declined compared to the previous year after showing an upward trend in the previous years.

H.2.3 Price undercutting and underselling

38. The Authority determined net sales realization of the domestic industry considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty.

All Persulphates	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Cost of sales	100	105.62	107.55	113.29
Selling Price - Domestic	100	95.932	94.598	93.934
Landed Values				
China PR	100	92.362	116.14	104.41
Japan		100	98.348	97.488
Total subject countries	100	100.91	118.5	109.15
Price Undercutting (%)				

China PR				25-35%
Japan				5-15%
Total Subject Countries				20-30%
NIP				*****
Price Underselling %				
China PR				30-40%
Japan				10-29%
Total Subject Countries				25-35%

39. The above data shows that even when the weighted average cost of production increased by about 13%, the net sales realization of the domestic industry declined by about 6% over the injury period. The landed value of imports from the subject countries also declined in the POI after showing significant increase over the injury period. The price undercutting and underselling by the imports from each of the subject countries have been found to be significant during the POI.

H.2.4 Price suppression and depression

40. To examine the price suppression effect of the dumped imports on the domestic prices the trend of net sale realization of the domestic industry has been compared with the cost of production. The data indicates that whereas cost of production increased during the injury investigation period, the sales realization declined. It therefore, appears that the domestic industry has been forced to suppress its prices, while the costs are rising, in order to retain its falling market share due to dumped imports. This price depression by the domestic industry appears to have caused financial loss to the domestic industry as the industry is unable to realize its rising cost in the domestic market.

41. The above provisional analysis shows that the dumped imports have adverse volume and price effect on the domestic industry in terms of increase in volume of dumped imports both in absolute terms, and by depressing the prices of the domestic market while eroding its market share.

H.3 Examination of other injury factors

42. After examining some of the injury factors i.e. actual and potential decline in sales and market share; actual and potential increase in volume of imports etc. in the previous section, the Authority has examined the other mandatory injury parameters as follows:

a) Capacity, Production, Capacity Utilization and Sales

43. As noted earlier, performance of the domestic industry in terms of capacity, production, capacity utilization and sales has been as under:-

	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Installed Capacity of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	139	163	163
Capacity of other producers	*****	*****	*****	*****
Production of DI	*****	*****	*****	*****
Trend	100	102	107	121
Capacity Utilization (%)	78%	58%	52%	58%
Trend	100	74	66	74
Domestic Sales	*****	*****	*****	*****
Trend	100	109	110	111
Other Producers	*****	*****	*****	*****
Total Demand	*****	*****	*****	*****
Trend	100	117	118	129

44. The Authority notes that the capacity of the domestic industry has increased in the year 2003-04 and 2004-05 keeping in view steady growth in domestic demand for the product. Total production of the domestic industry, including the production meant for exports, has also increased over the injury period by about 21%. However, capacity utilization has declined and remained quite low due disproportionately low increase in the sales volumes though the demand of the product has increased by about 29%.

b) Profits/Loss and Return on investments

45. Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as follows:-

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Average Domestic Cost of Sales	Rs./Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	106	108	113
Average domestic selling price	Rs./Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	96	95	94
Profit / Loss	Rs./Mt	*****	*****	*****	(*****)
Trend	Indexed	100	42	23	(14)
Investment	Rs./Lacs	380.13	534.59	580.42	744.91
Return on Capital Employed % (NFA Basis)	%	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100.00	46.81	37.93	10.57

612 GI/07-10

46. The above data shows that though there is an increase in overall production and sales, the cost of production has increased and the selling prices have declined. Thus, from positive profit margin per unit in the base year, the domestic industry reported net loss on the domestic sales in the POI. The return on the domestic investments of the domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the base year.

c) Employment and Wages

47. Number of employees and wages paid indicates that employment has increased because of the increase in production, which is in line with the capacity addition. The wages have also increased compared to the base year, which does not show any disproportionate increase in wage burden on the domestic industry.

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Employment (Manpower strength)	Nos.	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	115	116	119
Average wages per person	Rs.	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	120	134	153
Average wages per person per day	Rs.	131	157	175	200
Trend	Indexed	100	120	134	153

d) Inventories

48. Inventory position of the domestic industry shows significant inventory holding by the domestic industry though the average stock has come down because of increase in export activity.

Inventory	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Opening Stock	Mt	*****	*****	*****	*****
Closing Stock	Mt	*****	*****	*****	*****
Average Stock	Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	95	73	57
Average Stock in terms of No. of Days' sales	Nos.	52	45	35	27

g) Cash Flow

49. Cash profits of the domestic industry over the injury period have been as under:-

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Cash Profit : Indigenous	Rs./Lacs	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100.00	58.99	41.83	5.33
Cash Profit : Indigenous	Rs./Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100.00	53.74	38.01	4.77
Cash flow of the product under consideration	Rs./Lacs	*****	(*****)	*****	(*****)
Trend	Indexed	100.00	(9.83)	5.73	(122.38)

50. It is seen that the cash profits of the domestic industry has significantly deteriorated over the injury period.

h) Productivity

51. The productivity of the domestic industry has been examined with reference to production per day and per employee as follows:

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Total Production	Mt	*****	*****	*****	*****
Production Per day	Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	102	107	121
No of Employees	Nos	*****	*****	*****	*****
Productivity per employee	Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	89	92	102

52. The daily productivity of the domestic industry has improved though per employee productivity remains more or less same as base year.

i) Growth

53. Even though growth of the domestic industry in terms of parameters, such as capacity, production, sales, and productivity was positive, the same was negative in terms of market share, profits, cash flow, and return on investments.

j) Ability to raise fresh Investment

54. The Authority notes that the domestic industry has made fresh capital investments for expansion during the investigation period apparently keeping in view significant growth in demand for the product. However, the financial performance of the domestic industry is significantly eroding, which has adverse impact on its ability to raise fresh investments.

Investment	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Capital Investment for expansion	Rs./Lacs	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	86	28	118

K) Overall assessment

55. The above preliminary analysis of the factors indicate that in spite of the improvement in capacity, production, and sales, improvement in Production volume and sales as well as productivity the domestic industry suffered injury on account of decline in market share, net sales realization, profitability, return on investments and cash profits. Dumped imports from the subject countries were significantly undercutting the prices of the domestic industry, resulting in a situation where selling price was declining, whereas cost of production was increasing. The injury suffered by the domestic industry is material and significant.

K. Causal link

56. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, the Authority has also examined whether other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti Dumping could have contributed to injury to the domestic industry. Therefore, the following parameters have been examined:

- a) **Imports from other Countries:** - DGCIS data shows that the subject goods are being imported from several countries not under investigation. However, the volume of imports from such countries are either insignificant or at prices higher than the import prices from the subject countries and therefore, do not affect the prices in the domestic market;
- b) **Contraction in Demand:-** Demand for the subject goods shows a healthy growth during the entire injury investigation period and therefore, possible contraction in demand cannot be attributed to the injury to the domestic industry.
- c) **Pattern of consumption:-** No significant change in the pattern of consumption has been alleged by any interested party.
- d) **Conditions of competition:-** The goods are freely importable. The applicants are the major producers of the subject goods and account for almost 100% of the domestic production. Therefore, domestic competition could not be attributed to the injury to the domestic industry. No other evidence of conditions of competition or trade

restrictive practices has been brought to the knowledge of the Authority.

- e) **Developments in technology:-** There is no allegation of significant changes in technology which could have caused injury to the domestic industry.
- f) **Export performance of the domestic industry:-**

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Export Sale	Mt	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	109	108	159

The Authority notes that the export sale of the domestic industry is significant and shows positive growth. However, for the purpose of injury analysis the domestic sales only has been considered and injury, if any, caused due to the export performance of the domestic industry has not been attributed to the dumped imports.

- g) **Productivity:** - Productivity of the domestic industry has improved in terms of total output. Therefore, this cannot be attributed to the injury of the domestic industry.

57. The non-attribution analysis, as above, shows that no other known factors, other than the dumped imports, appear to have affected the domestic industry.

K.1 Factors establishing causal link

58. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has materially deteriorated due to dumped imports from subject countries. Therefore, the causal links between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:

- The dumped import prices from the subject countries have sharply declined during the POI after a significant increase, resulting in significant price undercutting. As a direct consequence, the domestic industry was forced to reduce the prices in spite of significant increase in cost of production.
- Reduction in the selling prices by the domestic industry adversely affected the profits, cash flow and return on investments of the company.
- Even though the domestic industry responded to decline in import prices, significant positive price undercutting resulted in increase in

612 GI/07-11

market share of imports from the subject countries. As a direct consequence, market share of the domestic industry has declined.

- d. Even when the cost of production was increasing, the selling prices were declining due to positive price undercutting. The dumped imports have prevented the domestic industry from effecting legitimate price increases.

59. Therefore, the Authority provisionally concludes that the domestic industry suffers material injury and the injury has been caused by the dumped imports from the subject countries.

L. Magnitude of Injury and injury margin

60. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from the subject countries and the injury margins have been worked out as follows:

Product	Country	Exporter	Injury Margin Rs Per Mt	Injury Margin %
Peroxopersulphates (Persulphates)	China PR	All Exporters	*****	30-40%
Peroxopersulphates (Persulphates)	Japan	All Exporters	*****	10-20%

M. Conclusions

61. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, as recorded in this finding, the authority provisionally concludes that:

- i) The subject goods have entered the Indian market from the subject countries at prices less than their normal values in the domestic markets of the exporting countries;
- ii) The dumping margins of the subject goods imported from the subject countries are substantial and above de minimis;
- iii) The domestic industry has suffered material injury and the injury has been caused to the domestic industry, both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

N. Indian industry's interest & other issues

62. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

O. Recommendations

63. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on various aspects of dumping, injury and causal links. Having initiated and conducted a preliminary investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry, in terms of the Rules laid down, and having provisionally established positive dumping margin against the subject countries, and having concluded that the domestic industry suffers material injury due to such dumped imports, the Authority is of the opinion that imposition of provisional measure is required to prevent injury being caused to the domestic industry during the investigation.

64. Therefore, Authority considers it necessary and recommends imposition of provisional anti-dumping duty on imports of subject goods, from the subject countries, in the form and manner described hereunder.

65. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of provisional anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, provisional antidumping duty equal to the amount indicated in Col 9 of the duty table annexed herewith is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

Duty Table

Sl. No	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit of Measure	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	283340	Peroxosulphates	1. Ammonium Persulphate	China PR	Any	Any	Any	414	MT	US\$

		or Persulph ates	2. Potassium Persulphat 3. Sodium Persulphate							
2	-Do-	-Do-	-Do-	Any exclu ding Japan	China PR	Any	Any	414	MT	US\$
3	-Do-	-Do-	-Do-	Japan	Any	Any	Any	203	MT	US\$
4	-Do-	-Do-	-Do-	Any Exclu ding China	Japan	Any	Any	203	MT	US\$

P. Further Procedures

66. The following procedure would be followed subsequent to notification of the preliminary findings:-

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final finding;
- (b) Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within 40 days from the date of publication of these findings. Any other interested party may also make known its views within forty (40) days from the date of publication of these findings;
- (c) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- (d) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

CHRISTY FERNANDEZ, Designated Authority